

उत्तेजना अपनी ऊर्जा से जीवाणु बनाकर उसके अन्दर भावना पैदा करती है। 'मन' उसे पहचान कर इच्छाशक्ति से विचार बनाता है। मन ही प्रकृति का सच्चा न्यायी है। इसी के न्याय से शरीर संचालित होता है। व्यक्ति के जीवन में दो गुण के लोग पाये जाते हैं— एक सहयोगी गुण और दूसरा विरोधी गुण का। सहयोगी गुण की भावना उसके आत्मबल को बढ़ाकर प्रकाश जगाता है। जिसके कारण जीवन में उत्साह बढ़ता है, यही प्रकाश प्रकृति से न्याय दिलाता है विरोधी गुण की ऊर्जा सहयोगी जीवाणु पैदा करती है। जिसके कारण नकारात्मक विचार आने लगता है। नकारात्मक विचार से कमजोर अंग प्रभावित होता है जो बीमारी का कारण बन जाता है। इसी प्रकार जो लोग आपका काम नहीं होने देना चाहते हैं वे इस तरह की शंका व्यक्त करते हैं कि अमुक व्यक्ति

ने बताया कि आपका काम नहीं होगा। और आपकी कुछ शिकायतें भी कर रहा था। जिसके लिए कहा जाता है वह नकारात्मक सोचने लगता है, उसके विचार न होने के बारे में ही सोचने लगता है, उसकी इस तरह की सोच घटना पैदा करने में सहायक होती है। बीमारी की शंका होने पर भी जीवाणु बन जाते हैं। विरोधी लोग वैसे भी नुकसान होने जैसी प्रदूषित भावना छोड़ते हैं जो मान समाज की बुराई का कारण बना हुआ है। इसी प्रदूषित भावना से मानव समाज में अनकों बीमारियाँ हो गयी हैं। जो जीव जिस तरह की ऊर्जा या पदार्थ छोड़ते हैं, उसे पचाने के भी वही जिम्मेदार होते हैं। क्योंकि प्रकृति का नियम है अपने गुण का पदार्थ अपने गुण में ही मिलता है। प्रकृति के अन्य जीव में इतने रोग नहीं पाये जाते हैं। प्रदूषित भावना से मानव समाज

अपने आपको दूर रख सकता है, यदि व्यक्ति अपने अन्दर नकारात्मक विचार न आने दे तो दूसरे द्वारा छोड़ा गया नकारात्मक विचार उसके अन्दर नहीं प्रवेश कर पायेगा। जिस तरह का तत्व शरीर छोड़ता है उसी तरह का तत्व मानव शरीर ग्रहण करता है। इसी प्रकार बुरी भावना को न छोड़े तो आप भी बुरी भावना के प्रहार से आने वाले रोग को रोक देंगे। व्यक्ति की इच्छाशक्ति से किया गया भोजन अलग गुण छोड़ता है। इसीलिए हर व्यक्ति की प्रवृत्ति अलग-अलग पायी जाती है, जो अलग-अलग गुण व्यक्त करती है। अपने इस गुण से व्यक्ति बीमारी को रोक सकता है, यदि इसका निरन्तर अभ्यास 6 महीने कोई कर दे तो वह बीमारी से पूरी तरह बचने लगता है। इसका अभ्यास निरन्तर यदि बनाये रखा जाए तो फिर रोग नहीं होगा।